27/7/2020

श्लोकसंख्या-20

* काश्यपः - श्रूयताम् -

" भूत्वा चिराय चतुरन्तमहीसपत्नी दौष्यन्तिमप्रतिरथं तनयं निवेश्य।
भर्त्रा तदर्पितकुटुम्बभरेण सार्धं शान्तं करिष्यसि पदं पुनराश्रमेऽस्मिन्॥"

शब्दार्थ -

चिराय = बहुकालं यावत् = बहुतसमय तक।
चतुरन्तमहीसपत्नी = चत्वारः समुद्राः अन्ताः प्रान्ताः पृथिव्याः समानभर्तृका भूत्वा = चारों समुद्रों तक व्याप्त पृथ्वी की सपत्नी होकर। अप्रतिरथं = अद्वितीयवीरम् = अनुपम वीर को। तनयं - पुत्रम् = पुत्र को। दौष्यन्ति = दुष्यन्तसुतं भरतम् = दुष्यन्तपुत्र भरत को। निवेश्य = राज्ये प्रतिष्ठाप्य = राज्य पर प्रतिष्ठित कर। तदर्पितकुटुम्बभरेण = तस्मिन् न्यस्तः बन्धुवर्गस्य भारः येन। भर्त्रा = पत्या दुष्यन्तेन = पति दुष्यन्त के द्वारा। सार्धं = सह (साथ)। शान्तं = निरुपद्रवं = उपद्रवरहितअवस्था में। अस्मिन् आश्रमे = इस आश्रम में (अस्मिन् तपोवने)। पुनः = भूयः = फिरसे। पदं = स्थानं निवासमित्यर्थः। करिष्यसि = विधास्यसि = करेगी।

ऋषिकाश्यप शकुन्तला को पतिगृहगमन के अवसर पर कहते हैं - सुनो - "बहुतसमय तक चारों समुद्रों तक व्याप्त पृथ्वी की सपत्नी (सौत) होकर, अपने अनुपम वीर पुत्र भरत को राज्यसिंहासन पर प्रतिष्ठित कर और जिसराजा दुष्यन्त ने भरत पर अपने परिवार का दायित्व रखा है, ऐसे अपने पति के साथ शान्त आश्रम में फिर आकर निवास करोगी।"

व्याकरणस्य भागः 28/7/2020

(क) चिराय = चिरकाल तक। यह अव्यय है। पहले के समय में इस अव्यय के रूप प्रयुक्त होते थे।

(ख) चतुरन्तमहीसपत्नी - इसके दो अर्थ हो सकते हैं - चारों समुद्र जिसकी सीमा हैं या चारों दिगन्त जिसकी सीमा हैं, ऐसी पृथ्वी की सपत्नी होकर।

चत्तारः अन्ताः यस्याः तादृश्याः महयाः सपत्नी, बहुव्रीहिगर्भकतत्पुरुष।

(ग) दौष्यन्तिम = दुष्यन्तस्य पुत्रः दौष्यन्तिः, तम् (उसको)। दुष्यन्त + इञ् (इ)। पुत्र अर्थ में अत इञ् से इञ् प्रत्यय।

अर्थ- दुष्यन्त के पुत्र को।

(घ) अप्रतिरथम् - न विद्यते प्रतिरथः प्रतिद्वन्द्वी यस्य सः, तम्, बहुव्रीहिसमास।

जिसका प्रतिद्वन्द्वी योद्धा कोई नहीं है, उसको अप्रतिरथ कहते हैं।

(ङ) निवेश्य - राज्यसिंहासन पर प्रतिष्ठित (~~बैठा~~) कर।

नि + विश् + णिच् + ल्यप् (य) = निवेश्य।

(च) तदर्पितकुटुम्बभरेण ⇒ तस्मिन् अर्पितः कुटुम्बस्य भरः येन तेन, बहुव्रीहिसमासः।

उसपर डाला है कुटुम्ब (परिवार) का भार जिसने ऐसे पति के साथ।

अलंकार कालक्षण → "तन्मालादीपकं पुनः। धर्मिणामेकधर्मेण सम्बन्धो यद् यथोत्तरम्॥"

(छ) अलंकार - शकुन्तला पर महीसपत्नीत्व का आरोप, मही पर पुत्र को प्रतिष्ठित करना तथा पुत्र पर परिवार का दायित्व रखने से मालादीपक अलंकार है।

चतुर्थ अंक के प्रसिद्ध चार श्लोकों में चतुर्थ श्लोक यह है।